इसीलिए तो बड़े जीव माँस नहीं खाते

भला ऐसा क्यों हुआ कि शेर, बाघ जैसे "राजा" जीवों को हाथी जितना बड़ा आकार न मिला? क्या विकास के दौरान कोई गड़बड़ी रह गई? मान लो शेर हाथी बराबर होता। तो क्या वो इतनी तेज़ दौड़कर इतना बड़ा जानवर पकड़ पाता जो उसके इतने बड़े शरीर की ऊर्जा सम्बन्धी ज़रूरत पूरी कर पाता। तुम्हारी-हमारी तरह लन्दन के प्राणी विभाग के कुछ वैज्ञानिकों की भी इसमें दिलचस्पी थी। और वे इसका पता लगाने में जुट गए।

लन्दन के क्रिस कार्बोन और उनके साथियों ने कई अलग-अलग आकार के माँसाहारी जीवों के बारे में जानकारियाँ जमा कीं। उन्होंने देखा कि ये जीव हर रोज़ कितनी ऊर्जा ग्रहण करते हैं और कितनी ऊर्जा खर्च करते हैं। जैसा सोचा था उन्होंने वैसा ही पाया। बड़े माँसाहारी जीव छोटे जीवों की तुलना में ज़्यादा ऊर्जा खर्च करते हैं। अगर किसी माँसाहारी का वज़न दुगुना हो जाए तो उसकी ऊर्जा सम्बन्धी ज़रूरतें 1.6 गुना बढ़ जाएँगी।

उन्होंने माँसाहारी जीवों को दो श्रेणियों में रखा। एक 20 किलो से कम वज़न वाले और दूसरे 20 किलो से ज़्यादा वज़न वाले। 20 किलो से कम वज़न वाले जीव ज़्यादातर चूहे, कीड़े आदि का शिकार करते हैं। यानी उनके शिकार उनके अपने आकार से काफी छोटे होते हैं। जबकि बड़े जीव लगभग अपने आकार वाले या अपने से भी बड़े आकार वाले जीवों का शिकार करते हैं। ऐसे प्राणियों को पकड़ने में काफी ताकत और ऊर्जा खर्च होती है।

वैज्ञानिकों ने देखा कि दोनों श्रेणियों के सबसे बड़े आकार वाले सभी माँसाहारियों को पर्याप्त खाना जुगाड़ने में काफी जद्दोजहद करनी पड़ती है। जैसे ध्रुवीय भालू, शेर आदि। इसलिए वे ऊर्जा बचाए रखने में लगे रहते हैं। वे आराम करते हैं, धीरे चलते हैं। उनका आकार देखकर जितना हमें लगता है, उनकी ऊर्जा पाने और खोने की दर उससे काफी कम होती है।

यह तो सम्भव है कि छोटे जीव बड़े जीवों का शिकार करने वाली रणनीति अपना लें। और विकास के क्रम में कभी इनका आकार बड़ा हो जाए। लेकिन बड़े माँसाहारियों के पास कोई बेहतर रणनीति नहीं जिसे वे अपना लें।

जमा किए गए आंकड़ों पर काम करते हुए वैज्ञानिकों ने पाया कि किसी भी माँसाहारी का वज़न अगर 1000 किलो से ज़्यादा होगा तो उसके लिए भोजन जुटाना सम्भव न होगा। वैज्ञानिकों ने यह भी पता लगाया कि अब तक के सबसे बड़े ज़मीनी माँसाहारी – छोटे मुँह के भालू – का वज़न 800 से 1000 किलो के बीच था। और आज के सबसे वज़नी माँसाहारी ध्रुवीय भालू का वज़न 300 से 600 किलो के बीच है।

विशाल माँसाहारी डायनासौर ट्रायनोसौरस रेक्स की ऊर्जा की ज़रूरत लगभग एक 1000 किलो के स्तनपायी जितनी ही थी। ये आंकड़े ज़मीनी माँसाहारियों के लिए हैं, पानी में रहने वालों के लिए नहीं।

वैज्ञानिकों का यह भी कहना है कि बड़े थलीय माँसाहारियों का ऊर्जा पाने और खर्चने का हिसाब-किताब इतना नपा तुला है कि इसमें ज़रा भी ऊँच-नीच हो जाए तो उन पर संकट आ जाता है। जैसे मौसम बदलने या रहवास खत्म होने का उन पर बहुत असर पड़ता है। शायद यही वजह है कि किसी समय के बड़े माँसाहारी आज हमारे बीच नहीं हैं। इससे हम कुछ अन्दाज़ तो लगा ही सकते हैं कि कौन-से जीव हैं जिनपर गुम होने का खतरा मण्डरा रहा है।

छोटी बद्दख की प्रार्थना

प्यारे ईश्वर।

जल धाराएँ दो हमें

कल और हमेशा हो बरसात

खूब सारे घोंघे दो हमें

और दूसरी भी स्वादिष्ट चीज़ें

खाने के लिए

हिफाज़त करो उन सबकी जो
काँ...काँ बोलती हों

और उन सब की जो जानती हों

कैसे तैरा जाता है।

- कार्मे बर्नो दे काज़ो
अनुवाद - राजेश जोशी

नारंगी

नारंगी रंग की नारंगी
बेच रहा फलवाला गाकर
और बजाता है सारंगी

चमक रहा है छिलका पीला
सुन्दर फल है बड़ा रसीला
प्यास बुझे मन खुश हो जाता
ढीली तबियत होती चंगी

सुधा चौहान